ISSN: 2350-0905

CTBC's

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL

Special Issue on

संचार माध्यमों में हिंदी की भूमिका

Volume : 2 / Issue : 3 (Special Issue)
January 2015

संचार माध्यमों में हिंदी की भूमिका

ISSN 2350-0905

मुद्रक एवं प्रकाशक

मा. प्राचार्य

चांदमल ताराचंद बोरा महाविद्यालय, शिरुर,

जि. पुणे, महाराष्ट्र (भारत)

दूरध्वनि क्र. ०२१३८ २२२३०१, २२४१७०

वेब : www.ctboracollege.edu.in

ई–मेल : ctborainfo68@gmail.com

ctborainfo@rediffmail.com

संस्करण : २०१५

मूल्य : २५० रूपए

© चांदमल ताराचंद बोरा महाविद्यालय, शिरुर, जि. पुणे, महाराष्ट्र (भारत)

Edition : 2015

Price : Rs. 250

- Research Papers published in this Special Issue are not Peer-Reviewed
- प्रस्तुत विशेषांक में प्रकाशित शोध आलेखों में दिए गए विचार, कल्पना संबंधित लेखकों की है। इनसे संपादक मंडल सहमत हो यह आवश्यक नहीं है।

५६	हिंदी के प्रचार–प्रसार में संचार माध्यमों का योगदान	रामदास काटे	१६७
५७	टेलीविजन एक मीडिया	सुनिता पठारे	१७१
५८	इंटरनेट और साहित्य	संगिता मांडगे	१७४
५९	विविध संचार माध्यम और हिंदी	डॉ. ऐनूर इनामदार	१७६
६०	जनसंचार माध्यम और हिंदी भाषा	अशोक राऊतराय	१८०
६१	आकाशवाणी के विकास में हिंदी का योगदान	प्रा. भूपेंद्र निकाळजे	१८३
६२	इंटरनेट के फायदे	प्रा. तुलसा मोची	१८५
६३	संचार माध्यमों में हिंदी की भूमिका	सौ. मोहिणी कुटे	१८७
६४	संचार माध्यमों में हिंदी की भूमिका	श्रीकांत जोशी	१८९

परामर्श मंडल

डॉ. विश्वनाथ सचदेव, मुंबई

डॉ. सुरेशकुमार जैन, शिरूर

प्रो. व्ही. एन. भालेराव, पुणे

प्रो. व्ही. कृष्णा, हैदराबाद

प्रो. संजय नवले, औरंगाबाद

डॉ. भवानी सिंह, हिमाचल प्रदेश

डॉ. अशोक कुमार, पंजाब

डॉ. मिथिलेश अवस्थी, नागपुर

इंटरनेट और साहित्य

वर्तमान सदी का उत्तरार्द्ध और आगामी सदी साइबर स्पेश का युग है जिसमें पूर्व के सभी माध्यमों के प्रतिरुप वास्तविक रुप में कम्प्यूटर के स्क्रीन पर उतर चुके है। इन्टरनेट पर पत्रकारिता की वहज से वेब आखबार की शुरुआत हो चुकी है। प्रौदयोगिकी के विकास ने जो आश्चर्यजनक प्रगति की है उससे यह भी सम्भव हो गया है कि एक केबिल और कुछ बटनें जनसंचार के साधनों का मिला–जुला रुप मनुष्य को उपलब्ध करा दे और उसकी यह विवशता भी दूर कर दे कि उस समय प्रस्तुत किए जाने वाले कार्यक्रमों में से ही उसे अपनी रुचि का कार्यक्रम चुनना पडे। कार्यक्रमों का एक विशाल संग्रह अब उपलब्ध होगा और मनचाही सामग्री मनचाहे समय पर पाने के लिए कुछ बटने घुमाने और एक बटन दबाने का ही परिश्रम करना होगा। संगीत नृत्य कला चलचित्र, साहित्य समाचार और एक बटन दबाने का ही परिश्रम करना होगा। संगीत नृत्य, कला, चलचित्र साहित्य, समाचार और सूचना सब इस नये माध्यम पर उपलब्ध होंगे। पुस्तक संग्रहालयों का रुप बदलेगा, साथ ही पुस्तकों का भी (१) निश्चित ही यह माध्यम हम सबके बीच साकार हो चुका है जिसे हम इन्टरनेट (अन्तरताना) कहते है, उसके बारे में उपरोक्त सभी पूर्णः सत्य है

"टेलीफोन लिंक और माईक्रोफोन ट्रांसमीशन जैसे वैज्ञानिक और इलेक्ट्रानिक संचार माध्यमों के सूक्ष्मतम और उच्यतम सार से विकसित यह अविश्य जाल (नेटवर्क) आज दुनिया का सबसे बडा वरदान है–मगर अभिशाप की पूरी शंका लिए पुण्य सृष्टि में सुन्दर पाप की तरह, क्योंकि अन्वेषक, विचारक, काष्य कल्याण के लिए जो खोजते और रचते हैं– उसमें कुछ लोक अकल्याण के अवसर निकाल ही लेते हैं।

अतः सवर्था इस नए माध्यम के प्रति भी साहित्य चिन्तकों की सचेतन दृष्टि आवश्यक है।

दूरदर्शन की अपसांस्कृतिक गतिविधियों के कारण हिंदी साहित्य जगत पहले से ही चित्रित था अब इन्टरनेट जैसे वैश्विक तंत्र से बेखबर हिंदी जगत के लिए इंटरनेट धीरे–धीरे चुनौती के रुप में खडा होता जा रहा है। संचार क्रांति के फलस्वरुप पुण्य सृष्टि अपनी घुसपैठ बनाता जा रहा है। हालांकि इस अंतरताने (इंटरनेट) के लिए आलादीन का जादुई चिराग रुपी संगणक (कम्प्यूटर) की आवश्यकता है जो सामान्य लोगों की पहुँच से अभी काफी दूर है, तो भी अपने बहुआयामी एवं प्रयोगधर्मी उपयोग के कारण इसका प्रचलन तेजी से बढ रहा है।

किताबों की दुनिया से अक्षर के सहारे ज्ञान प्राप्त करने वाले पाठकों के लिए इंटरनेट के व्दारा वीडियो टेक्स्ट और दृश्य पूरक ज्ञान से रुबरु होना नयी दुनिया में पहुँचने के समान है। किताबों के अक्षर पाठकों के मन की आँख खोलते हुए विश्व का प्रत्यक्षीकरण कराते है जब कि कम्प्यूटर के वैशीक संजाल दुनिया का प्रत्यक्षीकरण खुले नेत्रों से कराते हैं। इंटरनेट के आगमन के पूर्व इसकी सम्भावनाओं पर प्रख्यात समाजशास्त्री श्यामचरण दुबे के विचार की समीक्षा इस प्रसंग में आवश्यक प्रतीत होती है। साहित्य के संदर्भ में चर्चा करते हुए उन्होंने कहा था–"साहित्य के परंपरागत रुपों के लिए यह विकास एक चुनौती होगा। साहित्य इस विकास का उपयोग साधन के रुप में कर सकेगा पर साथ ही उसे इन नयी यान्त्रिकी को भी समझना होगा और नये माध्यम से समझौते करने होंगे। इस रह साहित्य का विस्तार तो सम्भव होगा पर उसके रुप में अनिवार्यतः अनेक परिवर्तन भी होंगे।

इंटरनेट पर www123.india.com के माध्यम से जब खोज (search) के खाने में Hindi Language and Literature अंकित करते है तो हम http;ifwww.cs.colostate.edu/malaiya/hindi it html के पत्ते पर पहुँचते हैं जहाँ हिंदी का होमपेज खुलता है और हिंदी बोलियाँ भाषा और साहित्य का संक्षिप्त परिचय मिलता है" वाराणसी के गंगाघाटों के छोटे से ...
देवनागरी में हिंदी ...

कुछ भी है वह अंग्रेजी में है फिलहाल गैर हिंदी भाषियों के लिए महत्वपूर्ण एवं शायद वैश्विक मंत्र के लिए अंग्रेजी की अपरिहार्यता के कारण यह है योगा की तरह हिंदी भाषा और साहित्य का अंग्रजी संस्करण हिंदी के इस होमपेज पर आगे हम जीन शीर्षकों पर पहूंच सकते हैं।

लिंक्स टू हिंदी रिसोर्सेस, आल एबाउट हिंदी सांग्स एवं इमार्टल पोस्टस एण्ड आर्थर्स। पहले पर पहुँचकर हम हिंदी के व्यावरण फोन ठिक्स आदि की कुछ जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। दूसरे पर हिंदी गीतकारों गानों के बारे में जान एवं सुन सकते हैं तथा तीसरे साईट पर हिंदी लेखकों की एक सूची मिलती है जो आरंभिक काल मध्यकाल एवं आधुनिककाल के उपशीर्षकों में वर्गीकृत है। इनमें से किसी भी रचनाकर के बारे में रचनाओं को जान पढ एवं सुन सकते हैं। सिध्द कवि सरहपा के बारे में जानने के लिए सरहपा पर क्लिक करने पर नानलन सस्टीटयूट का होम पेज खुलता है जहाँ संस्कायेवान विश्व विदयालय के प्रोफेसर हर्बट गुन्यर व्दारा रचित पुस्तक "Ecstatic spontaneity; saraha's three cycles of Doba" के साथ सरह का अत्यंत संक्षिप्त परिचय मिलना है" फिर इसी तरह महादेवी वर्मा ६) हरिवंशराय बच्चन ७) या किसी भी अन्य की कविताओं का आनंद ले सकते हैं और उपेन्द्रनाथ अश्क" ८) या अन्य रचनाकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकते है। गानों के वेबसाइट पर पहुँचकर अपने प्रिय कवि प्रदीप और गुलजार के काव्य का आनंद ले सकते हैं। अथवा वेब पर उपस्थित कुछ कवियों की समकालीन कविताएँ पढ सकते है।"९) इसी प्रकार 'हिंदी रचना' होम ऑफ हिंदी पोएम आई वेब है।" यही वेब पर उपस्थित हिंदी जगत का स्वरुप है। जिसे एक आलोचक ने इसे हिंदी एक भ्रष्ट वेब साइट बताया १०)

इंटरनेट एवं अन्य माध्यमों में सबसे बडा अंतर यह है कि इंटरनेट एक अन्त: क्रियात्मक माध्यम है। जहाँ पत्रकारिता में केवल "आपका पत्र" स्तम्भ ही अन्त: क्रिया का अवसर है इंटरनेट पर साहीत्य की पुस्तको के लिए एक पुस्तकालय जैसा भी हो सकता है जहाँ साहित्य के साथ–साथ साहित्यिक पत्रिकाओं के नए पुराने संस्करण भी प्राप्त किए जा सकते है। किसी भी साहित्य के प्रकाशन में संशोधित संस्करण होते हैं, इंटरनेट एक ऐसा माध्यम है जहाँ अदयत्न संस्करण अत्यंत कम समयान्तराल में प्राप्त किया जा सकता है। कुछ ऐसे समाचार पत्र हैं जो ई–मेल के माध्यम से समाचार प्रदान करते है। यहाँ बस, ई मेल के जरिए अपनी रुचि और पसंद बस बताना पडता है।

हालाँकि हिंदी जगत दूरदर्शन की अपसांस्कृतिक कार्य कलापों के कारण इंटरनेट के प्रति संशकित है। मल्टीमीडिया के प्रयोग से कम्प्यूटर व्दारा कविताएँ एक साथ पढी एवं सुनी जा सकती है। इसके लिए ऐसे साप्टवेअरों के निर्माण की संभावना है। इन संभावनाओं के साथ भाषा की उच्चतम शक्ति कविता की उस गहराई को स्क्रीन पर उतारने की आवश्यकता है। आगे समय बताएगा कि यह कितना सर्जनात्मक है। एक समर्थ रचनाकार इस मीडिया में रचना की जीवनी शक्ती उकेर सकता है। फिर संपूर्ण कविता की इस सम्भावना में एक सम्भावित प्रश्न भी निहित हे कि क्या इलेक्ट्रानिक माध्यमों खासकर दूरदर्शन के कारण कविता की जो नकारात्मक क्षति हुई उसकी पूर्ति इस डिजिटल माध्यम से संभव है।

संदर्भ

१. मैथीलीशरण गुप्त अभिभाषण, हिंदी विभाग दिल्ली विश्वविदयालय द्रष्टव्य परंपरा, इतिहास बोध और संस्कृति– श्यामचरण दुबे
२. "भरकासुरी न बन जाए जययात्रा", 'वागर्थ' सितंबर १९९७, पृष्ट ५
३. दृष्टव्य परिशिष्ट 'ख' इन्टरनेट पर हिंदी भाषा एवं साहित्य पृष्ठ १७४,१७५,१७७
४. दृष्टव्य परिशिष्ट 'ख' इन्टरनेट पर हिंदी भाषा एवं साहित्य पृष्ठ १६०

संगिता मांडगे
एम. फिल. शोधार्थी
चां. ता. बोरा महाविद्यालय शिरुर